Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

Biswan, Sitapur, Uttar Pradesh | rishivishwamitravidya.com

विश्वामित्र विद्या पत्रिका : वैदिक ज्ञान और पाणिनीय व्याकरण

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम् ।
सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि ॥४॥

पदपाठ: उपऽहूतः । वाचः । पतिः । उप । अस्मान् । वाचः । पतिः । ह्वयताम् ।
सम् । श्रुतेन । गमेमहि । मा । श्रुतेन । वि । राधिषि ॥ ४ ॥

पदार्थ (Word Meaning)

- **उपहूतः (उप-हूतः)** = समीप बुलाए गए / आवाहन किए गए (Invoked)
- **वाचस्पतिः (वाचः-पतिः)** = वाणी के स्वामी देव (Lord of Speech)
- **उप ह्वयताम्** = हमें समीप बुलाएं / हमें अनुज्ञा (permission) प्रदान करें
- **अस्मान्** = हमें
- **सम् गमेमहि** = हम भली-भांति संगत हों / प्राप्त करें
- **श्रुतेन** = सुने हुए (अध्ययन किए गए वेद-शास्त्रों व ज्ञान) के साथ
- **मा** = नहीं
- **वि राधिषि** = मैं वियुक्त (अलग) होऊँ

सायण भाष्य का अनुवाद

आचार्य सायण के अनुसार इस मन्त्र का भाव यह है:

"वाणी के पालक देव (वाचस्पति) का हमने अपने समीप आवाहन किया है। यद्यपि अन्य देव भी विद्यमान हैं, तथापि वे वाचस्पति ही हमारे अभीष्ट फलों (मेधा, ज्ञान आदि) के प्रदाता हैं, इसी भाव से हमने उनसे प्रार्थना की है। चूँकि मेरे द्वारा उनका आवाहन किया गया है, अतः वे वाचस्पति देव हम मेधा-कामी साधकों को वह ज्ञान रूपी फल प्रदान करने के लिए अपने समीप बुलाएं। अथवा, वे हमें ज्ञान प्राप्ति की अभ्यनुज्ञा (स्वीकृति/आशीर्वाद) दें।

उनके द्वारा अनुमत और आहुत होकर, हम विधिवत अध्ययन किए गए 'श्रुत' (वेद-शास्त्र और विद्या) के साथ भली-भांति संयुक्त हों। अर्थात्, वाचस्पति की कृपा से प्राप्त मेधा के द्वारा हम सम्पूर्ण वेद-शास्त्रों को आत्मसात कर लें।

अध्ययन किया हुआ वह वेद-ज्ञान हमारे भीतर सर्वदा स्थिर रहे, इसी की प्रार्थना 'मा श्रुतेन...' से की गई है। मैं उस श्रुत-ज्ञान से कभी भी 'विराद्ध' (वियुक्त या अलग) न होऊँ। अर्थात्, मैं सर्वदा वेद-शास्त्रों के ज्ञान से परिपूर्ण और संयुक्त रहूँ।"

व्याकरण एवं पद-साधना

आचार्य सायण ने पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों के माध्यम से पदों की अत्यंत सूक्ष्म सिद्धि की है:

- **उपहूतः:** 'उप' उपसर्ग पूर्वक 'ह्वेञ्' धातु से कर्मवाच्य में 'क्त' (निष्ठा) प्रत्यय। **सम्प्रसारण:** 'वचिस्वपि यजादीनां किति' (६.१.१५) से यण् (वकार) को सम्प्रसारण (उकार) होकर 'हूत' बनता है। **स्वर:** 'गतिरनन्तरः' (६.२.४९) से गति को प्रकृतिस्वर।
- **संगमेमहि:** 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'गम्लृ' (गतौ) धातु। 'समो गम्यृच्छिभ्याम्' (१.३.२९) से आत्मनेपद। **आशीर्लिङ्:** 'लिङयाशिष्यङ्' (३.१.८६) से 'अङ्' प्रत्यय। 'छन्दस्युभयथा' (३.४.११७) से सार्वधातुक संज्ञा प्राप्त होती है, जिससे 'लिङः सलोपोनन्त्यस्य' (७.२.७९) से सकार का लोप और गुण होकर 'संगमेमहि' रूप सिद्ध होता है।
- **वि राधिषि:** 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'राध साध संसिद्धौ' धातु। 'माङ्' (निषेध) के योग में 'लुङ्' लकार। वेदों में 'व्यत्ययो बहुलम्' (३.१.८५) के नियम से परस्मैपद के स्थान पर आत्मनेपद और 'इट्' का आगम।

आधुनिक ज्ञान के साथ तुलना

- **वाचस्पति (Speech & Neural Centers):** मस्तिष्क के Broca's area और Wernicke's area वाणी और समझ को नियंत्रित करते हैं। 'वाचस्पति' का आवाहन भाषा और चेतना केन्द्रों को जागृत करने की प्रक्रिया है।
- **श्रुतेन संगमेमहि (Auditory Learning & Encoding):** 'Auditory Processing' से प्राप्त डेटा जब चेतना के साथ जुड़ता है, तो वह अल्पकालिक स्मृति (Short-term memory) से दीर्घकालिक स्मृति (Long-term memory) में परिवर्तित हो जाता है।
- **मा श्रुतेन वि राधिषि (Overcoming the Forgetting Curve):** यह मन्त्र एक मनोवैज्ञानिक 'Self-Affirmation' (स्व-संकल्प) है, जो मानसिक एकाग्रता को बढ़ाकर भूलने की प्रवृत्ति (Forgetting Curve) को रोकता है।

दैनिक जीवन में उपयोग

- **विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-मन्त्र:** कक्षाओं या स्व-अध्ययन से पूर्व इसका उच्चारण मानसिक भटकाव को रोकता है।
- **शिक्षण संस्थानों में मंगलाचरण:** ज्ञानार्जन से पूर्व इस मन्त्र का प्रयोग शिक्षक और छात्र दोनों को ग्रहणशील (Receptive) बनाता है।
- **स्मृति और एकाग्रता संवर्धन:** अत्यधिक सूचनाओं (Information Overload) के बीच यह मन्त्र स्मृति को कुशाग्र करता है।

PRESENTED BY

Acharya Kapil
Director, Rishi Vishwamitra Vidya Foundation
Contact: 8756390767
Website: rishivishwamitravidya.com